सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ।।१७।।

सहस्र =हजार; **युग** =युगों; **पर्यन्तम्** =तक अवधि वाला; **अहः** =दिन; **यत्** =जो; **ब्रह्मणः** =ब्रह्मा का; **विदुः** =जानते हैं; **रात्रिम्** =रात्रि; **युग सहस्र अन्ताम्** =उसी प्रकार हजार युग वाली; **ते** =वह; **अहःरात्र** =दिन-रात के तत्त्व को; **विदः** =जानते हैं; **जनाः** =मनुष्य ।

अनुवाद

मानवीय गणना के अनुसार ब्रह्मा के एक दिन की अवधि एक हजार चतुर्युग है और इतनी ही बढ़ी उसकी रात्रि है।।१७।।

तात्पर्य

प्राकृत ब्रह्माण्ड की अवधि परिमित है। इसका प्राकट्य कल्पचक्र में होता है। ब्रह्मा का एक दिन 'कल्प' कहलाता है। इस एक कल्प में सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि—ये चारों युग एक हजार बार व्यतीत हो जाते हैं। सत्ययुग के लक्षण हैं सदाचार, बुद्धिमानी और धर्म; अज्ञान और पाप का अत्यन्त अभाव। यह युग १७,२८,००० वर्ष तक रहता है। त्रेता में पापकर्म होने लगता है। इस युग की अवधि १२,९६,००० वर्ष है। द्वापर में धर्म का ह्रास बढ़ जाता है और अधर्म का अभ्युत्थान हुआ करता है। इस युग की अवधि ८,६४,००० वर्ष है। सबके अन्त में कलियुग (जिसका हम पिछले ५,००० वर्ष से अनुभव कर रहे हैं) आता है। इसमें कलह, अज्ञान, अधर्म और पापाचार का प्राबल्य रहता है तथा यथार्थ धर्माचरण प्रायः लुप्त हो जाता है। इस युग का काल ४,३२,००० वर्ष है। कलियुग में अधर्म इतना अधिक बढ़ता है कि युग के अन्त में श्रीभगवान् स्वयं कल्कि अवतार ग्रहण कर दैत्यों का मर्दन और निज भक्तों का परित्राण करके नये सत्ययुग का सूत्रपात करते हैं। स्रष्टा ब्रह्मा के एक दिन में ये चारों युग एक-एक हजार बार व्यतीत हो जाते हैं। ब्रह्मा की रात्रि भी इतनी ही बड़ी है। इतने बड़े दिन-रात वाले सौ वर्ष तक जीवन-धारण करके ब्रह्मा का निधन हो जाता है। ये 'सौ वर्ष' पृथ्वी के ३१,१०,००,०४,००,००,००० वर्षों के तुल्य हैं। इस गणना के अनुसार, ब्रह्मा की आयु विलक्षण और कभी न समाप्त होने वाली प्रतीत हो सकती है; पर नित्यता की दृष्टि से तो वह बिजली के कौंधने के समान ही है। आन्ध्र महासागर के बुद्बुदों के समान कारण-समुद्र में असंख्य ब्रह्माओं का नित्य उदय-विलय होता रहता है। प्राकृत-जगत् के अंश—ब्रह्मा और उसकी सृष्टि नित्य परिवर्तनशील हैं।

प्राकृत-जगत् में ब्रह्मा तक जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि के चक्र से मुक्त नहीं है। फिर भी, इस जगत् की व्यवस्था के रूप में साक्षात् भगवत्सेवा करने से ब्रह्मा की सद्योमुक्ति हो जाती है। उच्च संन्यासी ब्रह्मा के उस विशिष्ट ब्रह्मलोक को जाते हैं, जो प्राकृत-जगत् में सर्वोच्च है और जो अन्य स्वर्गीय लोकों का विनाश हो जाने पर शेष